ओम् शान्ति 18-4-13 मधुबन

वार्षिक मीटिंग में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

(गुल्जार दादी)

आज अमृतवेले आप सबकी यादप्यार लेकर वतन में पहुंची तो सदा के मुआफिक आज भी बाबा सामने खड़े थे और दूर से ही अपने अमूल्य बांहों के हार और स्नेही मुख के सुनहरे शब्दों द्वारा बाबा बोले, आओ मेरी मस्तकमणि बच्ची आओ। बस, बाबा के यह आलाप सुनते ही शक्ति के सागर में समाई हुई सम्मुख पहुंच गई और रूहानी स्नेह की बांहों में लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज किसकी याद लाई हो? मैं बोली बाबा आपके पास पहले ही आज मीटिंग की विशेष टीचर्स बहिनों की और सेवाधारी पाण्डवों की याद पहुंच गई है। बाबा बोले, सिर्फ याद नहीं पहुंची है लेकिन सब मेरे विश्व सेवा के साथी सहयोगी, मणियां बन बाबा के गले में पिरोई हुई हैं, तो क्या देखा सब मणियां रंग बिरंगी लाइट से चमक रही थी। यह दृश्य भी देखने वाला था। बाबा भी एक-एक मणी को बहुत मीठी दृष्टि से देख रहे थे।

फिर बाबा बोले, बापदादा इन सभी बच्चों की हिम्मत देख खुश है जो सबने संकल्प किया है कि अब तो स्व-परिवर्तन द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना ही है। बापदादा हर बच्चे के इस संकल्प पर पदमगुणा मदद के लिए साथी हैं। सिर्फ वायदा करने वाले नहीं लेकिन वायदा निभाने वाले हैं, बोलो, मेरे सब महारथी बच्चे दृढ़ संकल्प की सफलता का हार गले में डाल लिया है ना। उसके बाद बाबा बोले, मेरे यह सेवा प्रति निमित्त महान बच्चे सदा सेवा में बिजी रहते हैं। चलो आज सबको वतन में बुलाए मनोरंजन करते हैं। बाबा का कहना और सबका वतन में इमर्ज हो जाना। सब अशरीरी स्थिति में लवलीन थे, कुछ समय के बाद बाबा बोले बच्ची, जैसे बापदादा की दृष्टि से सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव कर रहे हो, ऐसे सेवा में रहते भी स्वयं शक्तिशाली स्थिति की स्टेज से अशरीरी भव का मन को आर्डर दो और सेकण्ड में अशरीरी बन जाओ।

फिर बाबा बोले, कर्मयोग के समय भी, सेवा के समय अपनी स्थिति पावरफुल रहे, बोलो, इस मीटिंग के बाद अपने परिवर्तन का अनुभव जीवन में दिखाई देगा ना। यही बाबा की शिक्षायें मिलने का लाभ है ना। तो जैसे बाबा हर एक बच्चों में उम्मीदवार है और कल्प-कल्प हम ही बने हैं, वह प्रैक्टिकल करके ही दिखायेंगे। यह दृढ़ संकल्प आगे भी प्रत्यक्ष रूप में होगा ना। इस बार बाबा के मधुर मिलन की रिजल्ट दिखायेंगे ना! बोलो, क्या सोच रहे हो! तो सबके मन में यही संकल्प है कि हम ही करके दिखायेंगे, तो ऐसे दृढ़ संकल्पधारी बन आगे बढ़ते चलो। ऐसे कहते हुए अचानक क्या देखा हमारी दीदी-दादी को वतन में बाबा ने इमर्ज किया और सबको कहा कि देखो कौन आ रहा है! देखते ही देखते दोनों दीदी और दादी बाबा की बांहों में समा गई। फिर बाबा बोले, बाप को प्रत्यक्ष करने वाले सेवा में मगन रहने वाले बच्चों को आप दोनों अपने हाथों से सौगात दो। फिर क्या देखा कि बाबा के हाथ में बहुत सुन्दर सा हार्ट था, जिसके अन्दर बापदादा चमक रहा था और ब्रह्मा बाप फरिश्ते के रूप में थे। ब्रह्मा बाबा के मस्तक में शिवबाबा हीरे के रूप में चमक रहा था जो बड़ा सुन्दर लग रहा था। ऐसी सुन्दर सौगात दी फिर बाबा ने दृष्टि दी तो दीदी दादी मर्ज हो गई। बाबा ने हम सबको दृष्टि दी और हम साकार वतन में आ गये। अच्छा

-

ओम् शान्ति।